माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

मु.उ.पु. 24 पृष्ठ

0

कार्यालयीन उपयोग के लिए

परीक्षा के नाम

20 09

हाईस्कूल परीक्षा,

केन्द्र क्रमांक की सील

केन्द्र क्रमांक- 218001

निम्न रिक्तियों की सही प्रविष्टि परीक्षार्थी द्वारा की जाए।

1. विषय कोड 0 0 1   परीक्षा का विषय हिन्दी विशिष्ट

2. परीक्षा का माध्यम हिन्दी   परीक्षा की दिनांक 5-3-2009

3. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र का पूर्ण कोड नम्बर (सेट A, B, C, या D) अनिवार्यतः भरें

कोड	सेट
T-1001-	C

... सील के निशान से मिलाकर लगायें

... क्रमांक K   5390467

परीक्षार्थी का अनुक्रमांक (अंग्रेजी अंकों में)

1	9	2	1	2	7	3	5	8

नीचे दिये प्रत्येक कालम में ऊपर दिये गये अनुक्रमांक के अंकों को उसी क्रम में शब्दों में लिखा जाए :-

एक	नौ	दो	एक	दो	सात	तीन	पाँच	आठ

पर्यवेक्षक / केन्द्राध्यक्ष का प्रमाणीकरण

प्रमाणित किया जाता है कि परीक्षार्थी द्वारा निम्नानुसार पूरक उत्तरपुस्तिका ली गई है :-

क :- संख्या शब्दों में ✗   अंकों में ✗

ख :- परीक्षार्थी की बैठक व्यवस्था कक्ष क्रमांक 8 में है।

ग :- उत्तर पुस्तिका पर प्रश्न-पत्र का कोड नम्बर एवं सेट सही लिखा है।

हस्ताक्षर (पर्यवेक्षक) 5/03/2009

नाम ईश्वरदास वर्मा   पद प्र०शि०

पता / संस्था शा०उ०मा०वि० ... चनवारा

परीक्षार्थी द्वारा ली गई सभी पूरक उत्तर पुस्तिकायें, मुख्य उत्तर पुस्तिका के साथ संलग्न हैं।

हस्ताक्षर केन्द्राध्यक्ष

BSEMP

परीक्षार्थी, परीक्षक से अपेक्षा है कि वे पृष्ठ भाग पर दिये गये निर्देशों का यथेष्ट पालन सुनिश्चित करेंगे।

प्रमाणित किया जाता है कि उपरोक्तानुसार संलग्न पूरक उत्तर ... चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन ... पुस्तिका के अन्दर के अंक एवं कव्हर पृष्ठ पर दर्शाये अंक ए...

हस्ताक्षर (परीक्षक)

परीक्षक क्रमांक 9160099

हस्ताक्षर (उपमुख्य परीक्षक)

दिनांक 10/3/09

दिनांक

परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. परीक्षार्थी को अपना अनुक्रमांक/विषय/माध्यम/दिनांक एवं प्रश्न–पत्र का कोड (समूह) मुख पृष्ठ पर अंकित करना अनिवार्य है। अन्यत्र कहीं भी नहीं लिखा जाएगा।
2. अनुक्रमांक नीचे दिये गए उदाहरण अनुसार लिखा जाए :–

1	8	2	4	3	9	5	6	8
एक	आठ	दो	चार	तीन	नौ	पाँच	छः	आठ

3. उत्तर पुस्तिका के दोनों ओर पृष्ठों में लिखें। बीच में रिक्त स्थान न छोड़ें। भूल से छूटा/रिक्त स्थान तथा शेष खाली पृष्ठों को क्रास किया जाए।
4. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र हल करते समय ही, कव्हर पृष्ठ पर दी गई तालिका में प्रश्न क्रमांक के सम्मुख वाले कालम में उत्तरपुस्तिका का वह पृष्ठ क्रमांक अनिवार्य रूप से अंकित करें जिस पर प्रश्न का उत्तर लिखा गया है। यदि पूरक उत्तरपुस्तिका का उपयोग किया गया हो, तो उस पर 25 से प्रारंभ करते हुए पृष्ठ क्रमांक परीक्षार्थी द्वारा स्वयं डाले जाएँ।

परीक्षक के लिए निर्देश

1. केवल उन्हीं उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन करें जिन पर होलो क्राफ्ट स्टीकर चस्पा है।
2. उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया जाये।
3. बिना होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली तथा फटे हुए होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली सभी उत्तरपुस्तिकाऐं मूल्यांकन हेतु परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से भेजी जाये।

मूल्यांकन केन्द्र के लिए निर्देश

1. **O.M.R. SHEET** पर प्राप्तांक की प्रविष्टि करने हेतु केवल वही उत्तरपुस्तिकाएँ प्राप्त करें, जिनका मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया गया है। यदि होलो क्राफ्ट स्टीकर फटा हुआ पाया जाता है तो ऐसी उत्तरपुस्तिकाऐं मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी को पृथक से सौंपी जाएँ। ऐसे प्रकरणों के प्राप्तांकों की प्रविष्टि **O.M.R. SHEET** में नहीं की जाए। मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी ऐसी उत्तरपुस्तिकाऐं पुनः मूल्यांकन के लिये परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से सौंपेंगे।
2. उत्तरपुस्तिका के मुख्य पृष्ठ में अंकों एवं शब्दों में अंकित प्राप्तांकों को मिलान कर **O.M.R. SHEET** में अंकों की सटीक प्रविष्टि करें।
3. **O.M.R. SHEET** पर प्रमाणीकरण कर हस्ताक्षर करें।

उत्तर क्रमांक - 1 →

(i) ओज गुण

(ii) महर्षि वेद व्यास

(iii) कुन्ती

(iv) महाकाव्य

(v) दिन + ईश

उत्तर क्रमांक - 2 →

(i) (ख) सरस्वती

(ii) (ग) ज्ञान

(iii) (ख) शिक्षितों को

(iv) (ख) कुम्हार

(v) (क) कुण्डलियाँ

उत्तर क्रमांक - 3 →

(i) सत्य

(ii) असत्य

(iii) सत्य

(iv) असत्य

(v) सत्य

B S E M

उत्तर क्रमांक - ५ →

(i) नर्मदा — अमरकंटक

(ii) रात्रिकाल से चिर अभिशापित — चकवा चकवी पक्षी

(iii) तुर्की के राष्ट्रपति — महान कमलपाशा

(iv) बढ़ा चढ़ाकर वर्णन करना — अतिश्योक्ति

(v) श्वास - प्रश्वास — द्वन्द्व समास

उत्तर क्रमांक - 5 →

(i) रक्षाबन्धन का पर्व श्रावण मास की पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है।

(ii) घनश्याम ने सरस्वती से।

(iii) श्रीकृष्ण के हृदय पर गुंजों की माला शोभा पा रही है।

(iv) संचारी भाव।

(v) द्विगु समास।

उत्तर क्रमांक - 6 →

तुलसीदास जी ने भगवान श्रीराम के बालहठ का सहज एवं स्वाभाविक चित्रण किया है। तुलसीदास जी कहते हैं कि बालक राम चन्द्रमा को खिलौना समझकर उसे लेने की जिद करते हैं। कभी अपनी परछाई को देखकर डर जाते हैं। वे जिस वस्तु को लेने की जिद करते हैं वह न मिलने पर रोने लगते हैं और फिर जिद पूरी हो जाने पर खुश हो जाते हैं। कभी ताली बजाकर नाचने लगते

हैं । इस प्रकार श्रीराम अपने बचपन में ह० करते हैं जिसे तुलसीदास जी ने अपने काव्य में सहज, मनोहारी एवं स्वाभाविक चित्रण किया है ।

उत्तर क्रमांक - 7 →

उद्बोधन कविता में कवि रामधारी सिंह दिनकर जी कहते कि जब मनुष्य के अहं पर चोट पड़ती है तब वह पूर्णतः प्रतिक्रियावादी हो जाता है । वह यह समझने लगता है कि उसके अहं को चोट क्यों लगी । इसे समझकर वह अपनी गल्तियों को अंतर्मन में ढूंढ़ता है और उन्हें ठीक करने का प्रयास करता है । मानव जीवन में सुख-दुःख, आशा-निराशा आदि विघ्न बाधाएं आती रहती हैं । वह इन चुनौतियों का साहस के साथ सामना करता है और जीवन पथ में आगे बढ़ता है । अहं पर चोट पड़ने से मनुष्य अपनी गल्तियों को समझ लेता है और सफलता प्राप्त करते हुए अपने लक्ष्य की ओर पूर्ण साहस एवं आत्मविश्वास के साथ अग्रसर होता है ।

उत्तर क्रमांक - 8 →

रीतिकाल का समय सन. 1700 से 1900 तक का माना जाता है । इस काल की प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित हैं -

1. इस काल में लक्षण ग्रन्थों की रचना की गई ।
2. इस काल के काव्य में श्रृंगार रस की अधिकता रही ।
3. नायिका के नख-शिख वर्णन की अधिकता रही ।

दो प्रमुख रीतिकालीन कवियों के नाम निम्नलिखित हैं -

(i) बिहारी (ii) भूषण ।

BSEMP

उत्तर क्रमांक - 9 →

दो उपन्यास एवं उपन्यासकारों के नाम निम्नलिखित हैं -

1. गोदान — मुंशी प्रेमचन्द
2. बाणभट्ट की आत्मकथा — हजारी प्रसाद द्विवेदी

दो एकांकी एवं एकांकीकारों के नाम निम्नलिखित हैं -

1. दीपदान — रामकुमार वर्मा
2. सच्चा धर्म — सेठ गोविन्ददास

उत्तर क्रमांक - 10 →

हमारे देश को सर्वाधिक आवश्यकता शक्तिबोध की है। विश्व में किसी भी देश को सम्मान उसके शक्तिबोध के कारण ही मिलता है। किन्तु कुछ समाज विरोधी तत्व देश के शक्तिबोध को चोट पहुँचाते हैं। सार्वजनिक स्थानों पर दूसरे देशों की तुलना में अपने देश को हीन समझने वाले विचार प्रकट करते हैं। देश की कमजोरी, अव्यवस्था की चर्चा सार्वजनिक रूप से करते हैं। अपने देश की तुलना में दूसरे देशों को श्रेष्ठ बताते हैं। इन सब बातों से लोगों में अपने देश के प्रति हीन विचार पनपने लगते हैं। जिससे देश के शक्तिबोध को आघात पहुँचता है। कहने का तात्पर्य यह है कि हमें अपने देश की कमजोरी या अव्यवस्था की सार्वजनिक रूप से चर्चा न करके उस कमजोरी को दूर करने का प्रयत्न करना चाहिये। देश के शक्तिबोध की रक्षा करके ही हम उन्नति कर सकते हैं।

BSEMP

उत्तर क्रमांक - 11 →

निंदा की प्रवृत्ति से बचने के लिये हमें निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहिये –

1. अपने आत्मविश्वास को बढ़ाना चाहिये।
2. अहंकार को पास भी नहीं आने देना चाहिये।
3. जहाँ किसी व्यक्ति की बुराई चल रही हो वहाँ एक क्षण भी नहीं ठहरना चाहिये।
4. ईर्ष्या, द्वेष आदि नहीं करना चाहिये।
5. व्यक्ति को सदैव अपने कार्य में लगा रहना चाहिये ताकि निंदा का समय ही न मिल सके।

उत्तर क्रमांक - 12 →

(अ) मुक्तक काव्य → वह काव्य रचना जिसमें कथा नहीं होती है तथा प्रत्येक छन्द अपने पूर्व पद के प्रसंग से मुक्त रहता है, उसे मुक्तक काव्य कहते हैं। इसमें कथा के स्थान पर भाव या विचार होते हैं।

उदाहरण – बिहारी सतसई, कबीर की साखियाँ आदि।

1) करते अभिषेक ———— सर्वेश की ॥

उपर्युक्त पंक्तियों में उल्लाला छंद है।

उल्लाला छन्द → वह छन्द जिसमें प्रथम एवं तृतीय चरण में 15-15 एवं द्वितीय व चतुर्थ चरण में 13-13 मात्राएँ होती हैं, उल्लाला छंद कहलाता है। इसके अंत में लघु-गुरु होता है। यह एक मात्रिक अर्द्धसमछंद है।

I S E M P

पृष्ठ के अंक ...

योग पूर्व पृष्ठ

उत्तर क्रमांक - 13 →

(अ) (क) गौरव पुस्तक पढ़ो।

(ख) क्या तुम वाराणसी में रहते हो?

(ब) (क) निषेधवाचक वाक्य।

(ख) इच्छावाचक वाक्य।

(स) (क) आस्तिक।

(ख) अमर।

उत्तर क्रमांक - 14 →

लेखक - प्रेमचन्द

(क) दो रचनाएँ → गोदान, पंच परमेश्वर।

(ख) भाषा-शैली → मुंशी प्रेमचन्द जी पहले उर्दू में लिखते थे। बाद में आपने हिन्दी में लिखना प्रारंभ किया। इस कारण आपकी भाषा सरल, चुस्त व मुहावरेदार है। आपने अपनी रचनाओं में कहीं-कहीं उर्दू एवं फारसी शब्दों का प्रयोग भी किया है। शैली प्रवाहमय है एवं व्यंजनात्मक है।

(ग) साहित्य में स्थान → हिन्दी साहित्य जगत के इतिहास में आपका महत्वपूर्ण स्थान है। हिन्दी साहित्य के जगत में आप उपन्यास सम्राट के नाम से जाने जाते हैं।

ISEMP

BSEMP

उत्तर क्रमांक - 15 →

कवि - तुलसीदास

(क) दो रचनाएँ → रामचरितमानस, विनय पत्रिका।

(ख) भावपक्ष व कलापक्ष → तुलसीदास जी ने श्रीराम के चरित्र का अपने काव्य में बड़ा ही मनोहारी एवं स्वाभाविक वर्णन किया है। आपकी भक्ति दास्य भाव की है। आपने अपने काव्य में अवधी भाषा का प्रयोग किया है। कहीं-कहीं ब्रज भाषा के शब्दों का भी समावेश है। आपने अपनी अधिकांश रचनाओं में दोहे छन्द का ही प्रयोग किया है। आपके काव्य में रस, अलंकार आदि का समावेश भी है।

(ग) साहित्य में स्थान → हिन्दी काव्य साहित्य के जगत में आपको महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। आपके बारे में एक कहावत भी प्रचलित है - "सूर सूर्य तुलसी शशी।" अर्थात् हिन्दी काव्य साहित्य रूपी आकाश में आपका स्थान चंद्रमा की भाँति सुशोभित है।

उत्तर क्रमांक - 16 →

(क) साँई इतना ———————— न भूखा जाय।

संदर्भ → प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक नवनीत के 'कबीर की साखियाँ' नामक पाठ से उद्धृत किया गया है। इसके रचयिता कबीर दास जी हैं।

प्रसंग → कबीरदास जी ने प्रस्तुत पद्यांश में यह महत्व प्रतिपादित किया है कि मनुष्य को थोड़े में ही संतुष्ट हो जाना चाहिये।

व्याख्या → कबीरदास जी कहते हैं कि हे प्रभु मुझे अधिक की ~~अभिल~~ अभिलाषा नहीं है। मुझे बस इतना ही दीजिये जिससे मेरे कुटुम्ब का पालन हो सके। मुझे बस

इतना ही दीजिये कि मैं भी भूखा न रहूँ और द्वार पर आए साधु को भी भूखा न लौटना पड़े। कबीरदास जी के कहने का आशय यह है कि मनुष्य को अधिक की इच्छा नहीं करनी चाहिये। जो कुछ है उसी में ही संतोष करना चाहिये। दुनिया के आकर्षण में नहीं पड़ना चाहिये। हमें प्रभु (साईं) से इतना ही माँगना चाहिये कि स्वयं को भूखा न रहना पड़े और द्वार पर आया हुआ साधु भी भूखा न जाना चाहिये।

उत्तर क्रमांक -17 →

कोई भी .... गई हुई है।

संदर्भ → प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक नवनीत के "परंपरा बनाम आधुनिकता" से अवतरित किया गया है। इसके लेखक श्री हजारी प्रसाद द्विवेदी जी हैं।

प्रसंग → लेखक कहता है कि प्रत्येक विचार परंपरा से जुड़ा हुआ होता है।

व्याख्या → लेखक कहता है कि कोई भी विचार आसमान में पैदा न होकर मानव के मस्तिष्क से ही स्फुटित होता है और ये विचार परंपरा से प्राप्त होता है। कोई भी सुंदर से सुंदर फूल यह कभी भी दावा नहीं कर सकता कि वह पेड़ से भिन्न होने के कारण उससे एकदम अलग है। तथा कोई भी पेड़ मिट्टी से भिन्न होने के कारण यह कभी दावा नहीं कर सकता कि वह मिट्टी से एकदम अलग है। इसी प्रकार कोई भी आधुनिक विचार यह दावा नहीं कर सकता कि वह परंपरा से जुड़ा हुआ नहीं है। कहने का मतलब यह है कि

LSEMP

कोई भी विचार हो, वह परंपरा से जरूर जुड़ा हुआ रहता है। कार्य के रूप में या आधार के रूप में हर रूप में परंपरा की एक ऐसी श्रृंखला बनी हुई है जो अविच्छेद्य है। परंपरा की यह श्रृंखला अतीत यानि गुजरे हुए समय में बहुत अधिक गहराई तक गई हुई है।

उत्तर क्रमांक - 19 →

सेवा में,

श्रीमान् प्राचार्य महोदय जी

शास० उच्च० माध्य० विद्यालय कुण्डेश्वर जिला टीकमगढ़ (म०प्र०)

विषय - शाला त्याग प्रमाण पत्र प्राप्त करने हेतु प्रार्थना पत्र।

महोदय जी,

सविनय निवेदन है कि मैं आपके विद्यालय में कक्षा दसवीं का नियमित विद्यार्थी रहा हूँ। मैंने दसवीं की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कर ली है। आगे पढ़ाई के लिये मैं जो विषय लेना चाहता हूँ वे आपके विद्यालय में उपलब्ध नहीं है। अतः मुझे शाला त्याग प्रमाण पत्र देने की कृपा करें ताकि मैं अन्यत्र प्रवेश पा सकूँ और अपनी पढ़ाई जारी रख सकूँ।

इस कार्य के लिये मैं आपका तहे दिल से आभारी रहूँगा।

धन्यवाद

आपका आज्ञाकारी शिष्य

रोहित

दिनांक - 5/3/2009

B S E M P

उत्तर क्रमांक - 18 →

(क) शीर्षक → क्षमा ।

(ख) क्षमा इस पृथ्वी का गुण धर्म हैं । वीर वही होते हैं जो क्षमाशीलता का गुण रखते हैं । सभी मनुष्य गलती करते हैं इसलिये क्षमा की भावना हृदय में अति आवश्यक है । क्षमा के अभाव में क्रोध एवं हिंसा में वृद्धि होती है । अतः हमें क्षमाशील बनने की अत्यंत आवश्यकता है ।

(ग) क्षमा के अभाव में क्रोध, हिंसा और संघर्ष का साम्राज्य हो जाता है ।

उत्तर क्रमांक - 20

कम्प्यूटर और उसका महत्व

1. प्रस्तावना → आज का युग विज्ञान का युग है । आवश्यकता आविष्कार की जननी हैं । इन्हीं आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये मानव ने सुविधा हेतु अनेक वस्तुओं, मशीनों व यंत्रों का आविष्कार किया है। मानव द्वारा आविष्कृत कम्प्यूटर की खोज आधुनिक युग की सबसे बड़ी खोज है। कम्प्यूटर की खोज हावर्ड आइकेन ने की थी । कम्प्यूटर ऐसा यंत्र है जिससे कोई भी जटिल से जटिल काम को सरल एवं आसान बना सकते हैं। कम्प्यूटर आज के युग की विज्ञान द्वारा सर्वोत्तम एवं आश्चर्यजनक खोज है। जिस मानव ने कम्प्यूटर की खोज की वह कम्प्यूटर मानव से भी अधिक

बुद्धिशाली एवं शक्तिशाली है। विभिन्न क्षेत्रों में आज सिर्फ कम्प्यूटर का प्रयोग ही किया जाने लगा है।

2. कम्प्यूटर के अंग → कम्प्यूटर के अनेक अंग हैं जो इस प्रकार से हैं - 1. सी.पी.यू. 2. यू.पी.एस. 3. माउस 4. मॉनीटर 5. कीबोर्ड 6. प्रिंटर आदि।

3. कम्प्यूटर का उपयोग → आज के विज्ञान के युग में कम्प्यूटर का उपयोग हर क्षेत्र में किया जाता है। संचार के क्षेत्र में कंप्यूटर द्वारा ई-मेल, ई-पोस्ट, आदि कर सकते हैं। दूर विदेश में होने वाली घटनाओं का आँखों देखा हाल कम्प्यूटर से ही देख सकते हैं। बैंकिंग के क्षेत्र में भी आजकल कम्प्यूटर का उपयोग होने लगा है। रुपये पैसों की गणना, हिसाब आदि के लिये बैंकों में कम्प्यूटर का चलन प्रारंभ हो गया है। आजकल बेरोजगार व्यक्ति किसी नौकरी या अन्य जॉब के लिये कम्प्यूटर द्वारा ऑनलाइन फार्म (आवेदन पत्र) भर सकते हैं। इसके अलावा कृषि के क्षेत्र में भी कई रासायनिक पदार्थों का अध्ययन कम्प्यूटर द्वारा किया जाने लगा है तथा उसकी उपयोगिता भी सामने आई है। आज कई विद्यार्थी कम्प्यूटर साइंस के जरिये अपने भविष्य को उज्ज्वल बना सकते हैं। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी कई सामानों के आयात-निर्यात की जानकारी कम्प्यूटर में सुरक्षित रहती है। इंटरनेट सुविधा ने भी इसके व्यापक असर को लोगों में प्रसारित किया है। गणना आदि के क्षेत्र में इसकी उपयोगिता काफी अनुकूल व सही सिद्ध हुई है।

चिकित्सा के क्षेत्र में यदि देखा जाये तो कई दवाइयाँ जो कि कम्प्यूटर द्वारा ही जाँच की गई होती हैं और फिर जनसाधारण में दवाइयों का प्रचलन होता है। कम्प्यूटर ऐसा आविष्कार है जो कठिन से कठिन कार्य को भी मिनटों में हल कर सकता है। इस प्रकार कम्प्यूटर बहुत ही महत्वपूर्ण आविष्कार है।

घ. कम्प्यूटर से हानि → प्रायः हम देखते हैं कि कम्प्यूटर से हमें काफी लाभ होता है किन्तु कम्प्यूटर से हानियाँ भी हैं। कम्प्यूटर कई आदमियों का काम अकेले ही कर सकता है। इससे मानव समाज में कई लोग बेरोजगार हैं। कम्प्यूटर के द्वारा कई बमों, रॉकेटों का संचालन किया जाता है। इनके नष्ट होने से दुनिया तबाह भी हो सकती है। कम्प्यूटर ने लोगों को अकर्मण्य बना दिया है। कम्प्यूटर के द्वारा काम होने से लोग अपनी श्रम की शक्ति को पहचान नहीं पा रहे हैं। आज मानव कम्प्यूटर का गुलाम बन गया है।

ङ. उपसंहार → इस प्रकार हम देखते हैं कि कम्प्यूटर हमारे उपयोग हेतु कितना आवश्यक है, साथ ही साथ इसके उपयोग से लोग आलसी व अकर्मण्य भी हो चुके हैं। अतः कम्प्यूटर चूँकि एक आश्चर्यजनक आविष्कार है इस लिये इसका उपयोग लोगों / दुनिया की भलाई के लिये ही करना चाहिये। दुनिया को किसी भी प्रकार की क्षति कम्प्यूटर द्वारा पहुँचाने की कोशिश

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

नहीं करनी चाहिये। कम्प्यूटर का उपयोग तभी सार्थक है जब इसे मानव भलाई के लिये किया जाए। इस प्रकार कम्प्यूटर का मानव जीवन में विशेष महत्व है।

BSEMP

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 16 के अंक = कुल अंक

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 17 के अंक = कुल अंक

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

+ =

योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 18 के अंक

कुल अंक

मध्यप्रदेश

B
S
E
M
P

पृष्ठ के अंकों का योग

(19) योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 19 के अंक = कुल अंक

B
S
E
M
P

पृष्ठ के अंकों का योग

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 20 के अंक = कुल अंक

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 21 के अंक = कुल अंक

मध्यप्रदेश

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 22 के अंक = कुल अंक

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

23

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 23 के अंक = कुल अंक

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 24 के अंक = कुल अंक

BSEMP

M

पृष्ठ के अंको का योग